DAL Examination

अपभ्रंश व्याकरण एवं रचना

Paper-DAL-03

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks:100

There are 50 multiple choice questions in this paper. Attempt all questions. Each question carries 2 marks. You have to answer the question by marking A/B/C or D in the OMR Sheet supplied to you alongwitth the question paper. You must also darken the relevant option by making use of H.B. Pencil/Blue Pen/Black Pen. No. marks will be deducted for wrong answer.

यह प्रश्नपत्र कुल **50** बहु वैकल्पिक प्रश्नों का है। प्रत्येक प्रश्न **2** अंकों का है। आपको प्रश्नों के उत्तर अ/ब/स अथवा द का चयन करते हुए प्रश्नपत्र के साथ दी **OMR Sheet** में दर्ज करने हैं। साथ ही सम्बन्धित गोले को भी एच.बी. पेन्सिल/नीले बाल पैन अथवा काले बाल पैन से भरा जाना है। गलत उत्तर के लिए अंकों की कटौती नहीं की जाएगी।

1. हरि का तृतीया विभक्ति एकवचन का रुप है -

(अ) हरिहे (ब) हरिण

(स) हरिसु (द) हरिहो

2. सिद्धहेमशब्दानुशासन में कुल कितने अध्याय है -

(अ) पाँच (ब) सात

(स) दस (द) आठ

3. निम्न शब्दों में से संज्ञा शब्द पहचानिये -

(अ) ढोल्ला (ब) पइं

(स) मइँ (द) हउं

4. वर्तमानकाल के मध्यमपुरुष बहु वचन का प्रत्यय है -

(अ) मु (ब) मो

(स) हु (द) उं

5. निम्नलिखित शब्दों में से अव्यय है -

(अ) दिणु (ब) किह

(स) जेहु (द) समप्पउ

6. किसी भी भाषा को शुद्ध रूप में सीखने के लिए परम आवश्यक है -

(अ) रस का ज्ञान (ब) छंद का ज्ञान

(स) अलंकार का ज्ञान (द) व्याकरण का ज्ञान

7. वह के लिए सर्वनाम है -

(अ) ज (ब) अमु

(स) किं (द) अन्न

8. 'मुणि अम्हारिसा खमन्ति' का हिन्दी अनुवाद है-

(अ) मुनि हमारे जैसों को क्षमा करते हैं (ब) मुनि हमको क्षमा करता है

(स) मुनि मुझको क्षमा करता है (द) मुनि तुमको क्षमा करता है

9. 'तुहुं अप्पणु पेक्ख का हिन्दी अनुवाद है-

(अ) तुम उसको देखो (ब) तुम सब उनको देखो

(स) तुम अपने को देखो (द) तुम मुझको देखो

10. 'सिहि-उण्हउ सीयलु होइ मेहु' इस वाक्य में विशेषण है -

(अ) उण्ह (ब) होइ

(स) मेहु (द) उण्ह, सीयल

11. 'वहाँ चौदह नदियाँ है' इस वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है -

(अ) तेत्थु चउदह सरिउ सन्ति (ब) तेत्थु चउवीस सरिउ होउ

(स) तेत्थु चउतीस सरिउ सन्ति (द) तेत्थु चउवीस सरिउ होइ

12. चउ का सप्तमी बहु वचन का रूप है -

(अ) चउहि (ब) चऊसु

(स) चउ (द) चत्तारो

13. 'वीस' शब्द के पंचमी एकवचन का रूप है -

(अ) वीसहे (ब) वीसहिं

(स) वीसउ (द) वीसओ

14. 'निन्नानवे' का अपभ्रंश अनुवाद है -

(अ) णव (ब) णवइ

(स) णवणवइ (द) एक्कूणणवइ

15. 'वह तीन लोक में प्रिय है' का अपभ्रंश अनुवाद है -

(अ) ता तिण्णि लोअ वल्लहु आसि। (ब) ते तीसु लोएण वल्लहु आसि।

(स) सो तीहिं लोए वल्लहु आसि। (द) अम्हे तीसु लोआओ वल्लहु आसि।

16. गणनावाचक संख्या शब्दों को क्रमवाचक संख्या शब्द बनाने के लिए जोड़ा जाता है -

(अ) न (ब) स

(स) त (द) म

17. 'मैं दसवीं साड़ी खरीदती हूँ' इस वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है -

(अ) अम्हे दसमी साडी कीणइ (ब) हउं दसमी साडी कीणमि

(स) तुहुं दसमी साडी कीणउ (द) सो दसमी साडी कीणेसइ

18. 'तइयाहे पुत्तीहे पाणिग्गहणु पिउएं साणंदें किउ' इस वाक्य का हिन्दी अनुवाद है -

(अ) तीसरी पुत्री का विवाह पिता आनन्दपूर्वक करे।

(ब) तीसरी पुत्री का विवाह पिता द्वारा आनन्दपूर्वक किया गया।

(स) तीसरी पुत्री का विवाह पिता आनन्दपूर्वक करेगा।

(द) तीसरी पुत्री का विवाह पिता द्वारा आनन्दपूर्वक किया जाता है।

19. 'लच्छी' का तृतीया एकवचन का रुप है -

(अ) लच्छीए (ब) लच्छि

(स) लच्छीओ (द) लच्छिउ

20. साहु का पंचमी एकवचन का रुप है -

(अ) साहु (ब) साहु हुं

(स) साहु ण (द) साहु हे

21. सूत्र विश्लेषण का पहला सोपान है -

(अ) सूत्र में प्रयुक्त पदों का संधि विच्छेद (ब) सूत्र में प्रयुक्त पदों की विभक्ति

(स) सूत्र का शब्दार्थ (द) सूत्र का पूरा अर्थ (प्रसंगानुसार)

22. 'स्त्रियां जस् का सन्धि-विच्छेद है -

(अ) स्त्री+आम्+जस् (ब) स्त्रिय+आम्+जस्

(स) स्त्रिया+अम्+जस् (द) स्त्रियाम्+जस्

23. 'सि' संस्कृत में प्रयुक्त प्रत्यय-संकेत है जिसका अर्थ है -

(अ) तृतीया एकवचन का प्रत्यय (ब) षष्ठी एकवचन का प्रत्यय

(स) द्वितीया एकवचन का प्रत्यय (द) प्रथमा एकवचन का प्रत्यय

24. 'सौ पुंस्योद्वा' सूत्र का अर्थ है -

(अ) (अकारान्त) पुल्लिंग (शब्दों) में 'सि' परे होने पर विकल्प से (उसका) ओत्-'ओ' होता है

(ब) (अकारान्त) नपुंसकलिंग (शब्दों) में 'सि' परे होने पर विकल्प से (उसका) ओत्-'ओ' होता है

(स) (अकारान्त) पुल्लिंग व नपुंसकलिंग(शब्दों) में 'सि' परे होने पर विकल्प से (उसका) ओत्-ओ' होता है

(द) (आकारान्त) स्त्रीलिंग (शब्दों) में 'सि' परे होने पर विकल्प से (उसका) ओत्-ओ' होता है

25. कमलइं शब्द बना है -

(अ) स्यम्-जस्-शसां-लुक् सूत्र से (ब) आमो हं सूत्र से
(स) स्यादौ दीर्घ ह्रस्वौ सूत्र से (द) क्लीबे जस्-शसोरिं सूत्र से

26. 'जा' शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप है-
(अ) जु (ब) जए
(स) जहे (द) जओ

27. 'युष्मदः सौ तुहुं सूत्र का अर्थ है -
(अ) युष्मद्→तुम्ह से परे सि सहित तुम्ह का तुहुं (होता है)
(ब) युष्मद्→तुम्ह से परे सि होने पर तुम्ह का तुहुं (होता है)
(स) युष्मद्→तुम्ह से परे सि के स्थान पर तुम्ह का तुहुं (होता है)
(द) इनमें से कोई नहीं

28. वर्तमानकाल के प्रथमपुरुष (अन्यपुरुष) बहुवचन में अन्ति, अन्ते के स्थान पर विकल्प से होता है-
(अ) इ (ब) हिं
(स) दि (द) ए

29. 'एत' (नपुंसकलिंग) के प्रथमा एकवचन का रूप है-
(अ) एह (ब) एहो
(स) एइ (द) एहु

30. निम्नलिखित में से विधिकृदन्त का प्रत्यय है-
(अ) इउ (ब) एप्पि
(स) एवि (द) इएव्वउं

31. 'वह हँसते हुए बालक को रोकता है' वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है-
(अ) सो हसन्तो बालओ रोक्कहि (ब) सो हसन्तु बालउ रोक्कन्तु
(स) सो हसन्तु बालउ रोक्कइ (द) सो हसन्तु बालउ रोक्कमि

32. 'पढ़ते हुए बालक में ज्ञान होता है' वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है-
(अ) पढन्ति बालइ णाणं होह (ब) पढन्ति बालहिं णाणं होइ
(स) पढन्ति बालइ णाणहिं होइ (द) पढन्ति बालइ णाण होइ

33. विधिकृदन्त का प्रयोग नहीं होता है-
(अ) कर्मवाच्य में (ब) भाववाच्य में
(स) कर्तृवाच्य में (द) कर्मवाच्य व भाववाच्य में

34. संबंधक व हेत्वर्थक कृदन्त प्रयुक्त होते हैं -
(अ) अव्यय की भांति (ब) विशेषण की भांति
(स) विशेष्य की भांति (द) इनमें से कोई भी नहीं

35. 'खिला हुआ कमल शोभता है' वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है-
(अ) विअसिउ कमलु सोहइ (ब) विअसइं कमल सोहउ
(स) विअसाइं कमलाइं सोहन्ति (द) विअसिअइं कमलइं सोहन्तु

36. 'शान्त हुई बहिनों में संयम होता है' वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है-
(अ) उवसमिआहिं ससाहिं संजमो हवइ (ब) उवसमिआ ससाहिं संजमो हवउ
(स) उवसमिआहिं ससां संजमो हवहिं (द) उवसमिआहिं ससाओं संजमो हवन्तु

37. सव्वोदय का सन्धि विच्छेद है-
(अ) सव्वो+दय (ब) सव्वो+उदय
(स) सव्व+उदय (द) सव्व+ओदय

38. समान स्वर सन्धि का उदाहरण है-
(अ) दिणेस (ब) देसेला
(स) पंक (द) हिमालय

39. होइ इह में सन्धि है-
(अ) लोप-विधान सन्धि (ब) समान स्वर सन्धि

(स) असमान स्वर सन्धि (द) स्वर-सन्धि निषेध

40. पुण्णपावाइं में समास है-

(अ) दिगु (ब) कम्मधारय

(स) दंद (द) बहु व्वीहि

41. सिवगउ में समास है-

(अ) तइआ विभत्ति तप्पुरिस (ब) बिइआ विभत्ति तप्पुरिस

(स) चउत्थी विभत्ति तप्पुरिस (द) छट्ठी विभत्ति तप्पुरिस

42. पीअवत्थ में समास है-

(अ) दिगु (ब) कम्मधारय

(स) बहु व्वीहि (द) दंद

43. एगदंतु में समास है-

(अ) बहु व्वीहि (ब) दंद

(स) दिगु (द) अव्वईभाव

44. जिस समास में पहला पद बहु धा कोई अव्यय होता है दूसरा पद संज्ञा होता है वह है-

(अ) कम्मधारय समास (ब) बहु व्वीहि समास

(स) तप्पुरिस समास (द) अव्वईभाव समास

45. 'राजा परमेश्वर को प्रणाम करता है' वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है-

(अ) नरिंदो परमेसरु पणमइ (ब) नरिंदो परमेसरु पणमउ

(स) नरिंदो परमेसरु पणमहिं (द) नरिंदो परमेसरु पणमहुं

46. उभओ (दोनों ओर), सव्वओ (सब ओर), धि (धिक्कार), समया (समीप) - इनके साथ होती है-

(अ) प्रथमा विभक्ति (ब) द्वितीया विभक्ति

(स) सप्तमी विभक्ति (द) षष्ठी विभक्ति

47. 'सो दहहिं दिणहिं गंथु पढिअ' का हिन्दी अनुवाद है-

(अ) उसने दस दिनों में ग्रन्थ पढ़ा (ब) वह दस दिन तक ग्रन्थ पढ़ता है

(स) वह दस दिन तक ग्रन्थ पढ़े (द) वह दस दिन तक ग्रन्थ पढ़ेगा

48. भय अर्थवाली धातुओं के योग में भय का कारण रखा जाता है -

(अ) सप्तमी में (ब) द्वितीया में

(स) चतुर्थी में (द) पंचमी में

49. लज्ज क्रिया का अर्थ है -

(अ) खिलना (ब) शरमाना

(स) हँसना (द) डरना

50. सह, सद्धिं, समं (साथ अर्थवाले) शब्दों के योग में होती है-

(अ) चतुर्थी विभक्ति (ब) षष्ठी विभक्ति

(स) पंचमी विभक्ति (द) तृतीया विभक्ति

51. सिद्धहेमशब्दानुशासन के रचनाकार का नाम है -

(अ) आचार्य हेमचन्द्र (ब) आचार्य नेमिचन्द्र

(स) आचार्य देवचन्द्र (द) आचार्य जिनचन्द्र

52. अपभ्रंश-सूत्र किस भाषा में लिखे गये हैं -

(अ) हिन्दी (ब) पालि

(स) प्राकृत (द) संस्कृत

53. तुम्ह सर्वनाम के तृतीया विभक्ति बहु वचन का रूप है -

(अ) तुम्हेसु (ब) तुम्हेहिं

(स) तुम्हइं (द) तुम्हइं

54. हेत्वर्थक कृदन्त का प्रत्यय है -

(अ) अयं (ब) एवं

(स) इयं (द) एतं

55. ऐसे शब्द जिनके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है, वे कहलाते हैं -
(अ) कृदन्त (ब) सर्वनाम
(स) संज्ञा (द) अव्यय

56. आचार्य हेमचन्द्र सूरि को आचार्य पदवी प्रदान की-
(अ) ताराचन्द्र (ब) देवचन्द्र सूरि
(स) मानचन्द्र (द) टीकमचन्द्र

57. हमारे देश में प्राचीन काल से ही साहित्य रचना होती रही है -
(अ) केवल संस्कृत भाषा में (ब) केवल हिन्दी भाषा में
(स) लोकभाषाओं में (द) केवल राजस्थानी भाषा में

58. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे कहते हैं -
(अ) विशेष्य (ब) क्रिया
(स) इनमें से कोई नहीं (द) विशेषण

59. 'एह कुमारी' एह में विभक्ति है -
(अ) प्रथमा एकवचन (ब) तृतीया एकवचन
(स) पंचमी एकवचन (द) इनमें से कोई नहीं

60. यह के लिए सर्वनाम है -
(अ) त (ब) क
(स) एत (द) जा

61. 'तुम्हारी परीक्षा कब होगी' का अपभ्रंश अनुवाद है-
(अ) तुहारी परिक्खा कइयहुं होसइ (ब) तुहारी परिक्खा कइयहुं होइ
(स) तुहारी परिक्खा कइयहुं होउ (द) तुहारी परिक्खा कइयहुं होमि

62. 'पइं विणु सुण्णउ मोक्खु' इस वाक्य में विशेषण है -
(अ) पइं (ब) विणु
(स) सुण्ण (द) मोक्ख

63. 'संपत्ति स्थिर नहीं होती है' का अपभ्रंश अनुवाद है-
(अ) संपइ थिरा णउ होइ (ब) संपइ थिरा णउ होसइ
(स) संपइ थिरा णउ होउ (द) संपइ थिरा णउ होन्तु

64. 'वहाँ चैबीस नदियाँ हैं' इस वाक्य का अनुवाद है -
(अ) तेत्थु चउदह सरिउ सन्ति (ब) तेत्थु चउवीस सरिउ सन्ति
(स) तेत्थु चउतीस सरिउ सन्ति (द) इनमें से कोई नहीं

65. ति का तृतीया बहु वचन का रूप है -
(अ) तीहिं (ब) तिण्णि
(स) तीओ (द) तीसु

66. 'सौ' शब्द के द्वितीया बहु वचन का रूप है -
(अ) सयइं (ब) सयहो
(स) सए (द) सयस्सु

67. 'तब तक चौथा प्रहर समाप्त हुआ' इस वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है -
(अ) ताव चउरासीम पहरु समाहउ (ब) ताव चउत्थउ पहरु समाहउ
(स) ताव चउसट्ठिम पहरु समाहउ (द) इनमें से कोई नहीं

68. गणनावाचक विशेषण है -
(अ) 1, 2, 3, 4 आदि (ब) पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा आदि
(स) दोनों (द) दोनों ही नहीं

69. संस्कृत में प्रयुक्त प्रत्यय संकेत 'शस्' के रूप चलेंगे-
(अ) हरि की तरह (ब) भूभृत् की तरह

(स) राम की तरह (द) गोपा की तरह

60. संस्कृत में प्रयुक्त प्रत्यय संकेत 'ङि' के रूप चलेंगे-

(अ) हरि की तरह (ब) भूभृत् की तरह

(स) राम की तरह (द) गोपा की तरह

71. पुंस्योत् का सन्धि-विच्छेद है -

(अ) पुंस्य + उत् (ब) पुंसि + एत्

(स) पुंसि + ओत् (द) पुंस + ओत्

72. 'ङसेर्हे-हू' सूत्र का अर्थ है -

(अ) (अकारान्त शब्दों से परे) 'ङसि' के स्थान पर 'हे' (होता है)

(ब) (अकारान्त शब्दों से परे) 'ङसि' के स्थान पर 'हे' और 'हु' (होते हैं)

(स) (अकारान्त शब्दों से परे) 'ङसि' के स्थान पर 'हु' (होता है)

(द) इनमें से कोई नहीं

73. 'त' पुल्लिंग शब्द का प्रथमा एकवचन का रूप है-

(अ) ताओ (ब) तहुं

(स) तसु (द) त्रं

74. 'भ्यसाम्भ्यां तुम्हहं' सूत्र का अर्थ है -

(अ) (युष्मद्→तुम्ह से परे) भ्यस् और आम् सहित तुम्हे (होता है)

(ब) (युष्मद्→तुम्ह से परे) भ्यस् और आम् सहित तुम्हइं (होता है)

(स) (युष्मद्→तुम्ह से परे) भ्यस् और आम् सहित तुम्हहं (होता है)

(द) (युष्मद्→तुम्ह से परे) भ्यस् और आम् सहित तउ (होता है)

75. वर्तमानकाल के मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है-

(अ) हसन्ति (ब) हसदि

(स) हसहि (द) हसदे

76. निम्नलिखित में से संबंधक कृदन्त का प्रत्यय है-

(अ) इएव्वउं (ब) एवा

(स) इउ (द) अण

77. 'हँसती हुई कन्या के द्वारा छिपा जाता है वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है-

(अ) हसन्ता कन्ना लुक्कइ (ब) हसन्ताए कन्नाए लुक्किज्जइ

(स) हसन्ताहिं कन्नाहिं लुक्किज्जइ। (द) हसन्ताए कन्नाए लुक्कहि

78. व्याकरण शास्त्र के अनुसार कृदन्त के प्रकार हैं-

(अ) दो (ब) पाँच

(स) सात (द) तीन

79. वर्तमान कृदन्त व भूतकालिक कृदन्त कार्य करते हैं -

(अ) अव्यय की तरह (ब) विशेषण की तरह

(स) विशेष्य की तरह (द) इनमें से कोई भी नहीं

80. 'वह डरी हुई पुत्री को पालता है वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है-

(अ) सो डरिआ सुयाउ पालउ (ब) सो डरिआ सुया पालइ

(स) सो डरिआ सुयाओ पालन्ति (द) सो डरिआ सुया पालउ

81. कालाणलु का सन्धि विच्छेद है-

(अ) काला+अणलु (ब) काला+णलु

(स) कालअ+अणलु (द) काल+अणलु

82. असमान स्वर सन्धि का उदाहरण है-

(अ) जीवाजीव (ब) गंगोदय

(स) महिसि (द) डहिवि

83. समास के भेद हैं -

(अ) चार (ब) आठ

(स) दो (द) एक

84. लोप-विधान सन्धि में आ का लोप दिखाने के लिए जिस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है, वह है-

(अ) + (ब) ऽऽ

(स) = (द) -

85. वणन्तरे में सन्धि है-

(अ) अनुस्वार-विधान सन्धि (ब) लोप-विधान सन्धि

(स) असमान स्वर सन्धि (द) अव्यय सन्धि

86. संसारभीउ में समास है-

(अ) पंचमी विभत्ति तप्पुरिस (ब) बिइआ विभत्ति तप्पुरिस

(स) चउत्थी विभत्ति तप्पुरिस (द) छट्ठी विभत्ति तप्पुरिस

87. सुंदरपडिमा में समास है-

(अ) द्विगु (ब) तप्पुरिस

(स) कम्मधारय (द) दंद

88. गंडीवकर में समास है-

(अ) दिगु (ब) दंद

(स) बहुव्वीहि (द) अव्वईभाव

89. उवगुरु में समास है-

(अ) अव्वईभाव (ब) दंद

(स) बहुव्वीहि (द) दिगु

80. 'मंत्री राजा को नमस्कार करता है' का अपभ्रंश अनुवाद है-

(अ) मंती नरिंदस्सु णमइ (ब) मंती नरिंदो णमइ

(स) मंती नरिंदसु णमेसइ (द) मंती नरिंदसु णमिहिइ

91. 'हरी स्वर्ग में वास करता है' का अपभ्रंश अनुवाद है-

(अ) हरी सग्गु उववसइ (ब) हरी सग्गो उववसउ

(स) हरी सग्गं उववसेसइ (द) हरी सग्गु उववसहि

92. अपभ्रंश वैयाकरणों के अनुसार कारक नहीं है-

(अ) अपादान (ब) संबंध

(स) करण (द) कर्ता

93. सभी गत्यर्थक क्रियाओं के योग में होती है-

(अ) चतुर्थी विभक्ति (ब) द्वितीया विभक्ति

(स) सप्तमी विभक्ति (द) पंचमी विभक्ति

94. अपने कार्य की सिद्धि में जो कर्ता के लिए अत्यन्त सहायक होता है वह है-

(अ) कर्ता (ब) कर्म

(स) करण (द) इनमें से कोई नहीं

95. 'हणुवंत रामें सद्धिं सोहइ' का हिन्दी अनुवाद है-

(अ) हनुमान राम के द्वारा शोभा जाता है (ब) हनुमान राम के साथ शोभा

(स) हनुमान राम के साथ शोभता है (द) राम हनुमान के साथ शोभेगा

96. सिह (चाहना) क्रिया के योग में होती है-

(अ) पंचमी विभक्ति (ब) द्वितीया विभक्ति

(स) चतुर्थी विभक्ति (द) षष्ठी विभक्ति

97. जब कोई अपने को छिपाता है, तो जिससे छिपना चाहता है वहाँ होती है-

(अ) पंचमी विभक्ति (ब) तृतीया विभक्ति

(स) सप्तमी विभक्ति (द) द्वितीया विभक्ति

98. (खेदपूर्वक) स्मरण करना, दया करना अर्थवाली क्रिया के साथ कर्म में होती है -

(अ) सप्तमी (ब) संबोधन

(स) प्रथमा (द) षष्ठी

99. 'वह आसन पर बैठता है' इस वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है-

(अ) सो आसनु चिट्ठन्ति (ब) सो आसनि चिट्ठइ

(स) सो आसनहो चिट्ठइ (द) ते आसनं चिट्ठइ

100. पच्छाल क्रिया का अर्थ है -

(अ) रोना (ब) सोना

(स) धोना (द) खाना

101. आचार्य हेमचन्द्र सूरि का जन्म किस प्रान्त में हुआ -

(अ) गुजरात (ब) राजस्थान

(स) बिहार (द) कर्नाटक

102. आचार्य हेमचन्द्र ने व्याकरण के नियमों को उदाहरण सहित समझाया है -

(अ) गद्य के माध्यम से (ब) दोहों के माध्यम से

(स) गद्य व दोहों के माध्यम से (द) इनमें से कोई नहीं

103. विधि एवं आज्ञा के मध्यमपुरुष एकवचन का प्रत्यय है -

(अ) दि (ब) ह

(स) इ (द) से

104. निम्न शब्दों में से स्वार्थिक प्रत्ययवाला शब्द है -

(अ) दोस (ब) दोसो

(स) दोसु (द) दोसड

105. विद्वानों के अनुसार ईसा की लगभग सातवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक सम्पूर्ण उत्तर-भारत की व्यवहार की बोली रही है -

(अ) गुजराती (ब) अपभ्रंश

(स) मराठी (द) पंजाबी

106. अपभ्रंश भाषा में 'किस प्रकार' के लिए अव्यय है-

(अ) केम (ब) तेम

(स) एम (द) जेम

107. विशेषण जिन शब्दों की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें कहते हैं -

(अ) विशेष्य (ब) क्रिया

(स) सर्वनाम (द) संज्ञा

108. 'अहवइ एण काइँ सन्देहें' एण में विभक्ति है -

(अ) प्रथमा एकवचन (ब) तृतीया एकवचन

(स) द्वितीया एकवचन (द) चतुर्थी बहुवचन

109. तारिस का अर्थ है -

(अ) जैसा (ब) कैसा

(स) ऐसा (द) वैसा

110. 'कहो, कितनी रात बीत गई'? का अपभ्रंश अनुवाद है-

(अ) कहे, केत्तिय रयणि गय? (ब) कहे, केत्तिय रयणि गच्छ?

(स) कहे, केत्तिय रयणि गच्छेसइ? (द) कहे, केत्तिय रयणि गच्छइ?

111. निम्न शब्दों में से गुणवाचक विशेषण है -

(अ) यह (ब) नगर

(स) सुन्दर (द) इनमें से कोई नहीं

112. 'मेरी पिआरी माया मइं भोयण कारइ' इस वाक्य में गुणवाचक विशेषण है-

(अ) कारइ (ब) पिआरी

(स) माया (द) भोयण

113. उन्तालीस का अपभ्रंश अनुवाद है -

(अ) एगुणचालीस (ब) एक्कसट्ठि

(स) एक्कवण्णास (द) एक्कूणासी

114. 'वह हजार विद्याओं से विभूषित किया गया' का अपभ्रंश अनुवाद है -

(अ) सो सहासें विज्जाहिं परियरिउ (ब) ते सहासें विज्जाहिं परियरिउ

(स) तुहुं सहासें विज्जाहिं परियरिउ। (द) हउं सहासें विज्जाहिं परियरिउ

115. क्रमवाचक विशेषण है -

(अ) **1, 2, 3, 4** आदि (ब) पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा आदि

(स) दोनों (द) दोनों ही नहीं

116. 'अठारहवीं झोंपड़ी बनाई गई' इस वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है -

(अ) अट्ठारहवीं झुंपडो णिम्मिओ (ब) अट्ठारहवीं झुंपडु णिम्मअ

(स) अट्ठारहमी झुंपडा णिम्मिआ (द) अट्ठारहवी झुंपडाए णिम्मिआए

117. संस्कृत में प्रयुक्त प्रत्यय संकेत 'अम्' के रूप चलेंगे-

(अ) हरि की तरह (ब) भूभृत् की तरह

(स) राम की तरह (द) गोपा की तरह

118. सूत्र विश्लेषण का तीसरा सोपान है -

(अ) सूत्र में प्रयुक्त पदों का संधि विच्छेद (ब) सूत्र में प्रयुक्त पदों की विभक्ति

(स) सूत्र का शब्दार्थ (द) सूत्र का पूरा अर्थ (प्रसंगानुसार)

119. ओद्वा का सन्धि-विच्छेद है -

(अ) ओत् + वा (ब) ओ + द्ववा

(स) उत् + वा (द) अ + ओद्ववा

120. 'ङसि' संस्कृत में प्रयुक्त प्रत्यय-संकेत है जिसका अर्थ है -

(अ) तृतीया एकवचन का प्रत्यय (ब) षष्ठी एकवचन का प्रत्यय

(स) द्वितीया एकवचन का प्रत्यय (द) पंचमी एकवचन का प्रत्यय

121. 'तुम्ह' का षष्ठी एकवचन का रूप है-

(अ) पइं, तइं (ब) तुहुं

(स) तुम्हासु (द) तुज्झ

122. 'सावस्मदो हउं' सूत्र का अर्थ है -

(अ) अस्मद्→अम्ह से परे सि सहित हउं (होता है)

(ब) अस्मद्→अम्ह से परे हउं (होता है)

(स) अस्मद्→अम्ह से परे सि के स्थान पर हउं (होता है)

(द) इनमें से कोई नहीं

123. वर्तमानकाल के मध्यमपुरुष बहुवचन का प्रत्यय है-

(अ) मि (ब) सि

(स) से (द) हु

124. निम्नलिखित में से हेत्वर्थक कृदन्त का प्रत्यय है-

(अ) एवा (ब) अणहं

(स) इउ (द) अवि

125. 'वह प्रसन्न होते हुए पुत्रों के लिए जागे' वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है-

(अ) सो हरिसन्तसु पुत्तसु जग्गउ (ब) सो हरिसन्तेण पुत्तेण जग्गइ

(स) सो हरिसन्ता पुत्ता जग्गहिं (द) सो हरिसन्तसु पुत्तसु जग्गन्ति

126. अव्यय की तरह प्रयुक्त होते हैं-

(अ) संबंधक कृदन्त (ब) हेत्वर्थक कृदन्त

(स) संबंधक व हेत्वर्थक कृदन्त (द) विधिकृदन्त

127. संबंधक कृदन्त का प्रयोग होता है-

(अ) सकर्मक व अकर्मक क्रिया के साथ (ब) अकर्मक क्रिया के साथ
(स) सकर्मक क्रिया के साथ (द) इनमें से एक भी नहीं

128. विधिकृदन्त का प्रयोग होता है-
(अ) कर्मवाच्य में (ब) भाववाच्य में
(स) कर्तृवाच्य में (द) कर्मवाच्य व भाववाच्य में

129. 'सोये हुए पुत्र के द्वारा उठा जाता है वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है-
(अ) सयिएण पुत्तेण उट्ठिज्जइ (ब) सयिअहिं पुत्तेण उट्ठिज्जउ
(स) सयिएहिं पुत्तेण उट्ठिज्जन्तु (द) सयिएं पुत्तहिं उट्ठिज्जउ

130. गामणीसु का सन्धि विच्छेद है-
(अ) गामणी+सू (ब) गाम+णीसु
(स) गामणि+सू (द) गामणी+इसु

131. अपभ्रंश में सबसे अधिक सन्धि का प्रयोग हुआ है-
(अ) लोप-विधान सन्धि (ब) समान स्वर सन्धि
(स) असमान स्वर सन्धि (द) स्वर-सन्धि निषेध

132. 'धणहे णाणु गुरुअर अत्थि' इस वाक्य का हिन्दी अनुवाद है-
(अ) धन होने पर ज्ञान होता है (ब) ज्ञान से धन अच्छा होता है
(स) धन से ज्ञान अच्छा है (द) धन से ज्ञान होता है

133. लोप-विधान सन्धि का उदाहरण है-
(अ) नरीसर (ब) राम
(स) संझा (द) जीवाजीव

134. पइदिण में समास है-
(अ) बहुव्वीहि (ब) कम्मधारय
(स) दिगु (द) अव्वईभाव

135. नवतत्त में समास है-
(अ) दिगु (ब) अव्वईभाव
(स) तत्पुरूष (द) बहुव्वीहि

136. अपभ्रंश में विभक्तियाँ होती हैं-
(अ) तीन (ब) चार
(स) पाँच (द) आठ

137. लोप-विधान सन्धि में अ का लोप दिखाने के लिए जिस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है, वह है-
(अ) + (ब) -
(स) = (द) ऽ

138. शरीर के विकृत अंग को बताने के लिए होती है-
(अ) सप्तमी विभक्ति (ब) सम्बोधन
(स) तृतीया विभक्ति (द) षष्ठी विभक्ति

139. एक समुदाय में से जब एक वस्तु विशिष्टता के आधार से छाँटी जाती है, तब उसमें होती है -
(अ) षष्ठी (ब) द्वितीया
(स) प्रथमा (द) तृतीया

140. जब एक कार्य के हो जाने पर दूसरा कार्य होता है तो हो चुके कार्य में प्रयोग होता है-
(अ) सप्तमी का (ब) संबोधन का
(स) प्रथमा का (द) षष्ठी का

141. सम्बोधन के लिए चिह्न है -
(अ) ने (ब) पे
(स) से (द) हे

142. जो शब्दांश क्रियाओं या अन्य शब्दों के अन्त में लगकर उनके अर्थ और स्वरूप को परिवर्तित कर देते हैं, उन्हें कहते हैं-

`(अ) उपसर्ग (ब) संज्ञा

(स) सर्वनाम (द) प्रत्यय

143. 'मैं ध्यान करता हूँ' वाक्य का अपभ्रंश अनुवाद है-

(अ) हउं झाउं (ब) तुहुं झाहि

(स) अम्हे झाहुं (द) तुम्हे झाह

144. 'लोभहे कोह पभवइ' इस वाक्य का हिन्दी अनुवाद है-

(अ) लोभ क्रोध को उत्पन्न करता है (ब) लोभ के लिए क्रोध होता है

(स) लोभ होने पर क्रोध होता है (द) लोभ से क्रोध उत्पन्न होता है

145. संबंध में विभक्ति होती है -

(अ) षष्ठी (ब) संबोधन

(स) प्रथमा (द) तृतीया

146. अधिकरण में विभक्ति होती है -

(अ) सप्तमी (ब) संबोधन

(स) प्रथमा (द) षष्ठी

147. जिसके ऊपर क्रोध किया जाए उसे रखा जाता है-

(अ) चतुर्थी विभक्ति में (ब) द्वितीया विभक्ति में

(स) सप्तमी विभक्ति में (द) षष्ठी विभक्ति में

148. कर्तृवाच्य के कर्ता में विभक्ति होती है-

(अ) पंचमी विभक्ति (ब) चतुर्थी विभक्ति

(स) षष्ठी विभक्ति (द) प्रथमा विभक्ति

149. जहाँ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है वहाँ व्याकरण के विधान के अनुसार अर्थ होता है -

(अ) से परे (ब) से परे होने पर

(स) के स्थान पर (द) इनमें से कोई नहीं

150. अपभ्रंश में व्याकरण के लिए शब्द है -

(अ) वागरण (ब) वाघरण

(स) वाकरण (द) वाउरण

उत्तर कुंजी

1 (ब)	2 (द)	3 (अ)	4 (स)	5 (ब)	6 (द)	7 (ब)	8 (अ)	9 (स)	10 (द)
11 (अ)	12 (ब)	13 (अ)	14 (स)	15 (स)	16 (द)	17 (ब)	18 (ब)	19 (अ)	20 (द)
21 (अ)	22 (द)	23 (द)	24 (अ)	25 (द)	26 (स)	27 (अ)	28 (ब)	29 (द)	30 (द)
31 (स)	32 (द)	33 (स)	34 (अ)	35 (अ)	36 (अ)	37 (स)	38 (द)	39 (द)	40 (स)
41 (ब)	42 (ब)	43 (अ)	44 (द)	45 (अ)	46 (ब)	47 (अ)	48 (द)	49 (ब)	50 (द)
51 (अ)	52 (द)	53 (ब)	54 (ब)	55 (द)	56 (ब)	57 (स)	58 (द)	59 (अ)	60 (स)
61 (अ)	62 (स)	63 (अ)	64 (ब)	65 (अ)	66 (अ)	67 (ब)	68 (अ)	69 (ब)	70 (अ)
71 (स)	72 (ब)	73 (द)	74 (स)	75 (स)	76 (स)	77 (ब)	78 (ब)	79 (ब)	80 (ब)
81 (द)	82 (ब)	83 (अ)	84 (ब)	85 (ब)	86 (अ)	87 (स)	88 (स)	89 (अ)	90 (अ)
91 (अ)	92 (ब)	93 (ब)	94 (स)	95 (स)	96 (स)	97 (अ)	98 (द)	99 (ब)	100 (स)
101 (अ)	102 (ब)	103 (स)	104 (द)	105 (ब)	106 (अ)	107 (अ)	108 (ब)	109 (द)	110 (अ)
111 (स)	112 (ब)	113 (अ)	114 (अ)	115 (ब)	116 (स)	117 (ब)	118 (स)	119 (अ)	120 (द)
121 (द)	122 (अ)	123 (द)	124 (ब)	125 (अ)	126 (स)	127 (अ)	128 (द)	129 (अ)	130 (द)
131 (अ)	132 (स)	133 (अ)	134 (द)	135 (अ)	136 (द)	137 (द)	138 (स)	139 (अ)	140 (अ)
141 (द)	142 (द)	143 (अ)	144 (द)	145 (अ)	146 (अ)	147 (अ)	148 (द)	149 (स)	150 (अ)